Beginning of civilization in India (Part-3)

For U.G.Part-1,Paper-1

मध्य पुरापाषाण कालीन औजार

इस काल में अधिकांश उपकरण पूर्व काल की अपेक्षा तकनीकी दृष्टि से विकसित तथा मुलायम हो जाते है तथा इन औजारों के आकार और भार में कमी आई। इनमें से बहुत से औजार तैयार किए गए कोर पर बनाए जाने लगे जिसमें ***लेवलाइस*** तकनीक से बने औजार भी शामिल हैं। इस काल के प्रमुख औजार **स्क्रैपर** तथा **बोरर** है। इसके अलावा **हस्त कुठार**(Hand axe), **पेबुल उपकरण**(Pebble tools), **क्लीवर**(Cleaver), **नोक वाले अग्रक**(Point) तथा **ब्लेड**(Blade) का प्रयोग मिलता है । औजार निर्माण में Quartzite,Chert जैसे पत्थरों का इस्तेमाल होता था।

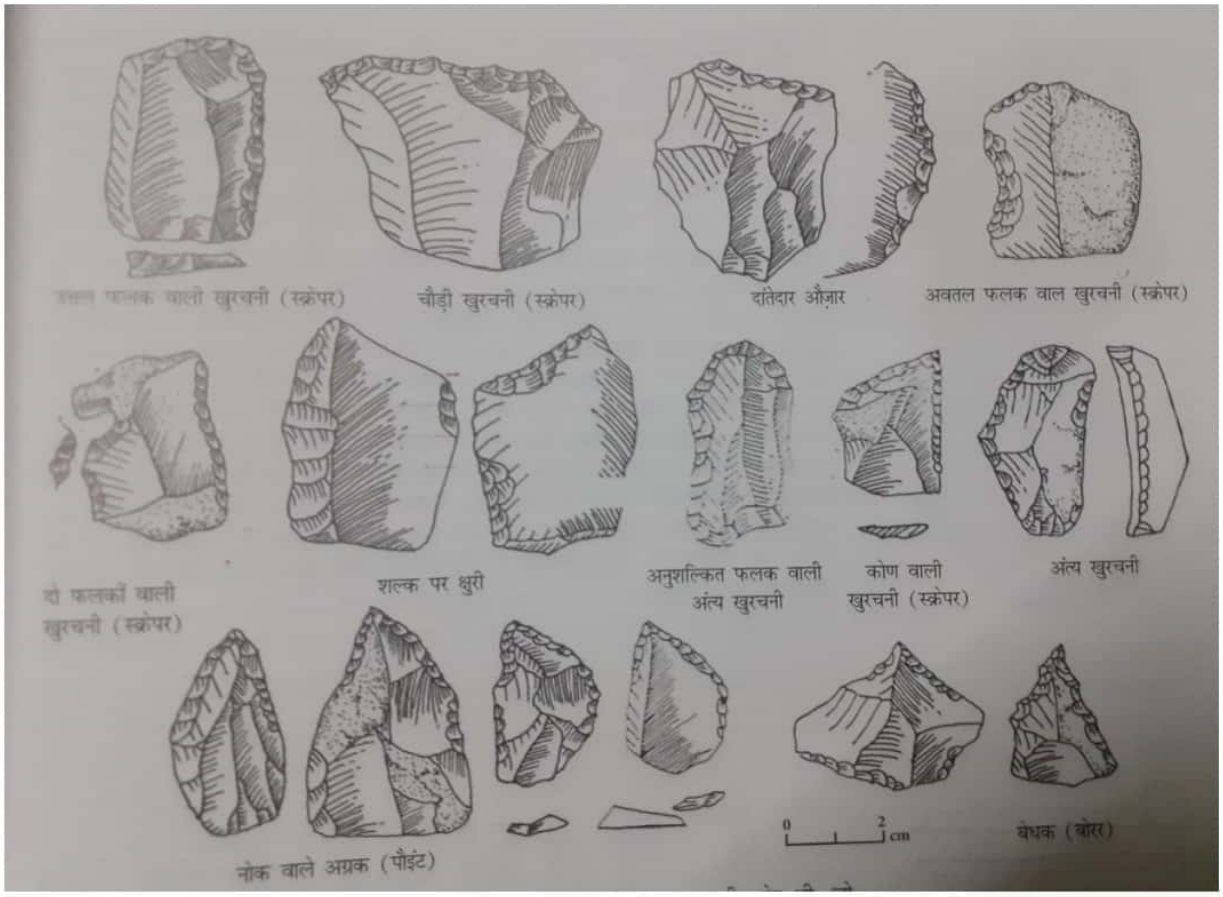

Scanned with CamScanner

लेवल्या तकनीक (Levallois technique)

लेवल्या तकनीक शल्कित फ्लेक बनाने की विकसित तकनीक है। यह **पेरिस** के नजदीक स्थित लेवल्या नामक स्थल के नाम से जाना जाता है जहां प्रागैतिहासिक पत्थर के औजारों को बनाने के संदर्भ में इस तकनीक को पहली बार देखा गया। इस तकनीक के अंतर्गत क्रोड से शल्क या फ्लेक को पृथक करके वांछित आकार देने के स्थान पर **क्रोड को ही सावधानी पूर्वक तैयार किया जाता** था। एक लेवल्या लगभग कछुए के जैसा दिखलाई पड़ता है इसलिए इन्हें कभी-कभी ***कच्छप क्रोड*** की संज्ञा भी दी जाती है।

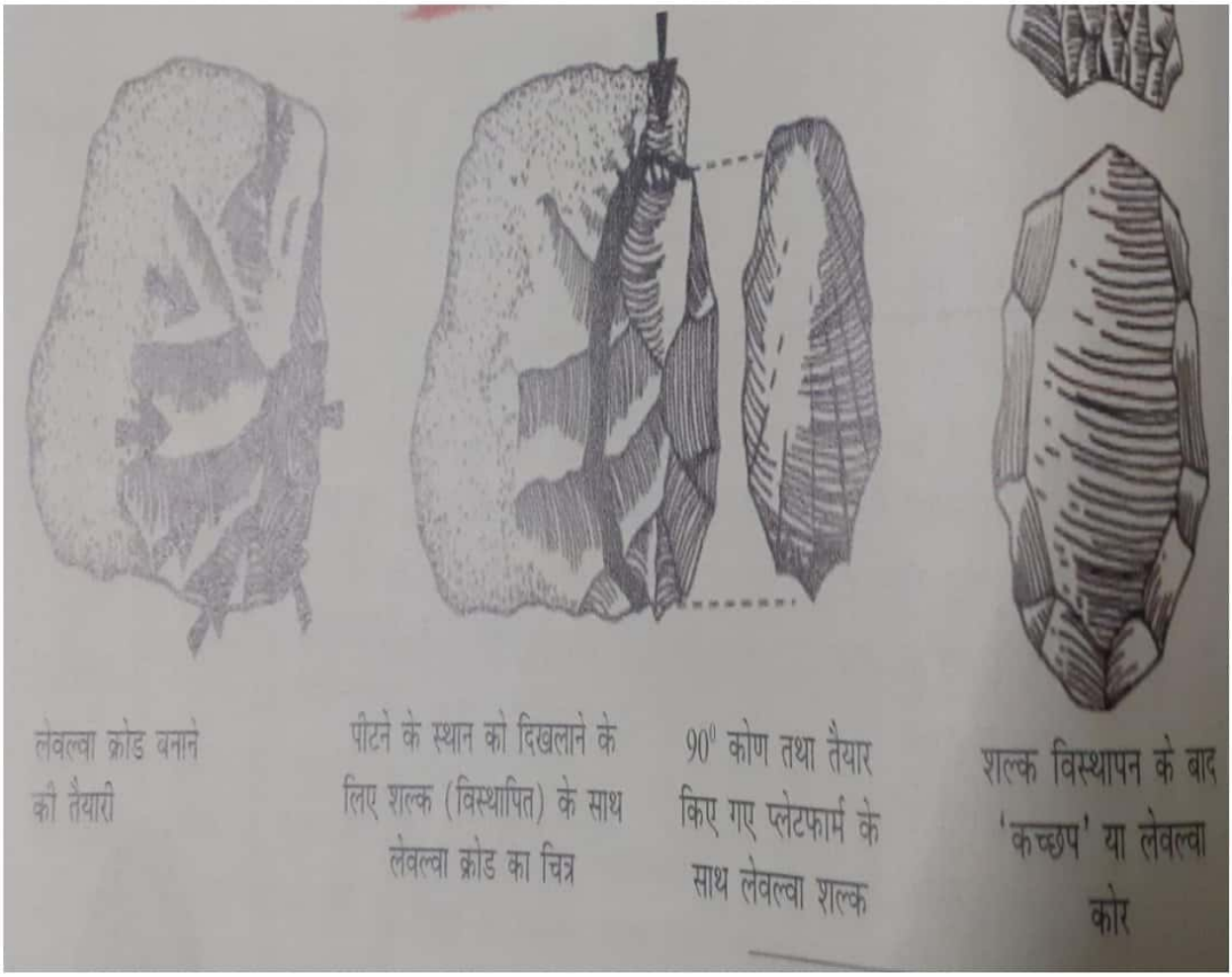

Scanned with CamScanner

उच्च पुरापाषाण कालीन औजार

उच्च पुरापाषाण युगीन इन औजारों की तकनीकी श्रेष्ठता समानांतर फ्लेकों वाले ब्लेडों के आधार पर निर्मित है। औजार अपेक्षाकृत छोटे बनने लगे थे जो दरअसल पर्यावरण में आ रहे बदलाव के प्रति मानवीय अनुकूलन की प्रवृत्ति को दर्शाती है। उच्च पुरा पाषाण कालीन औजार ब्लेड फलकों वाला एक औजार है जिसकी लंबाई इसकी चौड़ाई के दोगुने से भी अधिक होती है ।ऐसे ब्लेड जिसके दोनों फलक प्रायः समानांतर होते हैं उन्हें समानांतर फलको वाला ब्लेड कहा जाता है । उत्कीर्णक या तक्षणी एक सूक्ष्म औजार है जिन्हें ब्लेड पर बनाया जाता है । इसके काम करने वाले तक्षणी का प्रयोग उत्कीर्णक औजार या हड्डी अथवा लकड़ी में छेद करने के लिए किया जाता होगा जो पत्थर के औजारों में बेंट के रूप में काम में लाया जाता होगा।

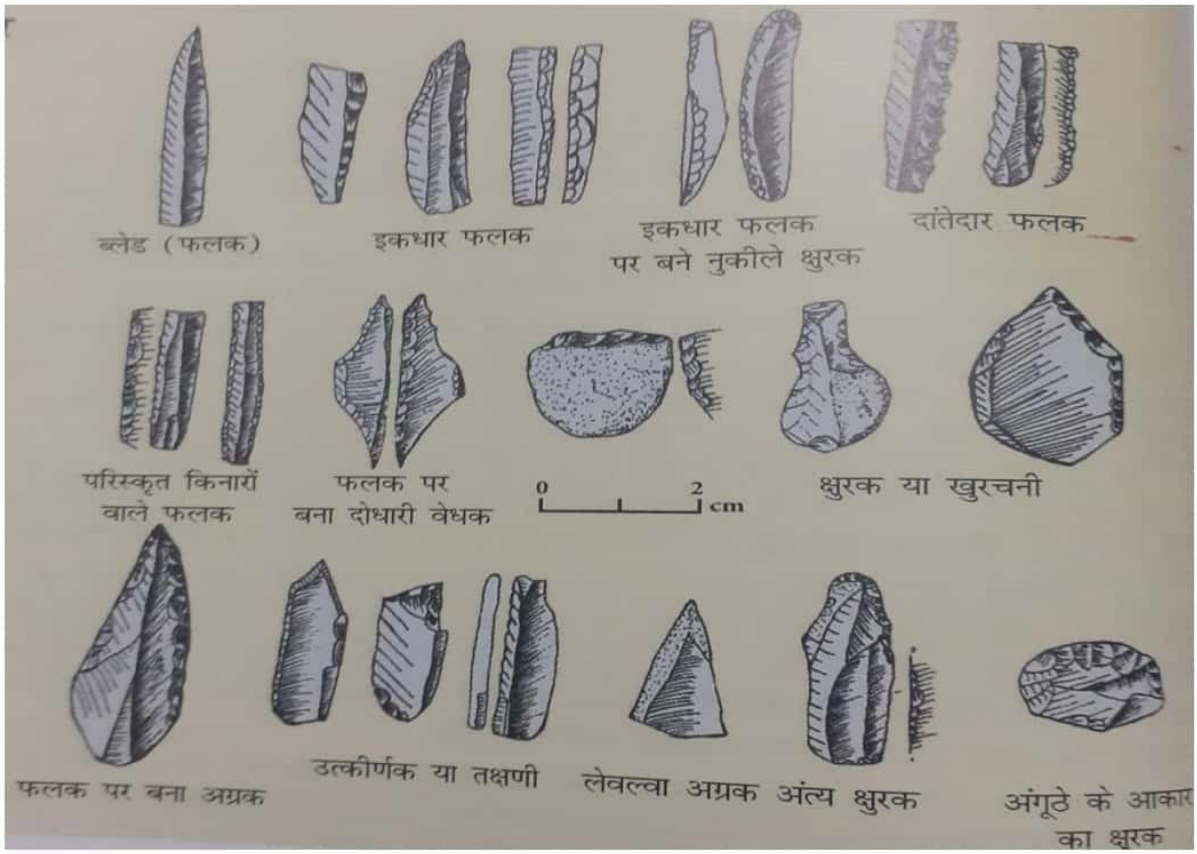

Scanned with CamScanner

उच्च पुरा पाषाण युगीन स्थल

1. उत्तर पश्चिम संघाओ गुफा से मध्य तथा उच्च पुरापाषाण अवशेष प्राप्त हुए हैं जिनमें जंतुओं की हड्डियां चूल्हे इत्यादि सम्मिलित है।
2. ऊपरी सिंध के **रोहड़ी पठार** और निचले **सिंध** के माइलस्टोन 101 से उच्च पुरापाषाण औजार मिला है
3. **कश्मीर** (18,000 वर्ष पूर्व)
4. मध्य भारत में **विंध्य क्षेत्र के गुफा** आश्रय
5. **बेलन घाटी** (राजस्थान)25,000 से 19,000 वर्ष पूर्व)
6. सोन नदी घाटी
7. झारखंड के **छोटानागपुर क्षेत्र** और **राजमहल पहाड़ियों** के क्षेत्र जिसमें बिहार के मुंगेर जिला का **पैसरा** स्थल भी सम्मिलित है
8. पश्चिम बंगाल के विभिन्न हिस्से
9. आंध्र प्रदेश के **कुरनूल** से हड्डियों से बने औजार मिले हैं

पुरापाषाण कालीन कला एवं संप्रदाय

कला के इतिहास के शुरुआत पुरापाषाण काल से ही मानी जा सकती है जिससे पुरापाषाण कालीन जनजीवन की झलक मिलती । शैल चित्रों से पुरापाषाण कालीन कला का प्रतिनिधि होता है जिसमें ***पेट्रोग्लिफ्स*** (Petroglyphs) भी सम्मिलित है। इसका अभिप्राय ऐसी कला से है जिसमें चट्टानों पर आकृति बनाने के लिए आवश्यकतानुसार छेनी, हथौड़ी मारकर या खुरचकर उसको किसी माध्यम से उकेरा जाता है। पुरापाषाण काल में शैल चित्र जैसे स्थाई माध्यम तथा प्रतिमाओं जैसे चलायमान माध्यम दोनों का निर्माण हुआ। **यूरोप**, **ऑस्ट्रेलिया** तथा **दक्षिण अफ्रीका** इन तीनों महा देशों में पुरा पाषाण युगीन कला की पर्याप्त उपलब्धि विशेषकर शैल चित्रों के रूप में देखी जा सकती है। इन शैल चित्रों में **जंतुओं का चित्रांकन**

Scanned with CamScanner

सर्वाधिक प्रचलित था। कुछ चित्र **आखेट संबंधी** कर्मकांड के भी प्रतीत होते हैं नारी स्वरूप को प्रदर्शित करती प्रतिमाओं को विद्वानों ने **वीनस** की संज्ञा दी है।

- कला और कर्मकांड संबंधी गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण साक्ष्य **भीमबेटका की गुफा III F-24** से प्राप्त हुआ है जिसे ऑडिटोरियम केव या सभाकक्ष गुफा का नाम दिया गया है। इसकी तिथि निचले मध्य पुरापाषाण युग के बीच तय की गई है।
- मध्य प्रदेश के **बाघोर** नामक स्थल से पुरापाषाण काल की एक वेदिका की जैसी आकृति प्राप्त हुई है। यहां चूना पत्थर के मलबों से बना 85 सेंटीमीटर वाले एक वृत्ताकार चबूतरा मिला है। इस आकृति के ठीक बीच में रंगीन संकेंद्रीय त्रिकोण वाली एक आकृति चित्रित प्राप्त हुई है।
- भारत के ऊपरी पुरापाषाण कालीन पुरातात्विक संदर्भ से **शुतुरमुर्ग के अंडे** के छिलके प्राप्त होते हैं जिसमें उत्तर प्रदेश के **बांदा जिला**, महाराष्ट्र के **पाटने**, **राजस्थान**, **मध्य प्रदेश** आदि जगह सम्मिलित है। इनमें से केवल **पाटने** से प्राप्त शुतुरमुर्ग के अंडे के छिलके पर मानव निर्मित चित्रांकन पाया गया है। इस सामग्री के मनके और तश्तरियां भी बनाई जाती थी। इनमें से कुछ में छिद्र भी पाए जाते हैं जिनके जरिए उन्हें बांधा जा सकता था। शुतुरमुर्ग के अंडे से बने मनके की संख्या बहुत कम है।

To be continued...

BY : ARUN KUMAR RAI
Asst.Professor
P.G. Dept.of History
Maharaja College,Ara

Scanned with CamScanner